भजन

क्या अब कहें रहनी में है जो कैसे कहें– कैसे कहें क्या अब कहें
हुक्म ये साहेब के सजदा बजाए,
मैमिन की रहनी को पिया कहने आए
रहनी तो कहनी सुननी छोड़ के आए
मोमिन तो कहनी करनी एक कर दिखाए

1 हंस करके मोमिन तो गले दुख लगाए,
लज्जत तो पाए माया सितम जब बढाए
ईमान है जो धनी पर ना डोल पाए, रहनी तो कहनी.....

2 कोई दे कुसाला भी तो भला तिन का चाहे
प्रीतम की मैं को ले के मैखुदी मिटाएं
प्यार का नाता मोमिन प्यार से निभाएं,रहनी तो कहनी.....

3 मोमिन की रहनी आवाज़ पे चलना
हादी के कदमों पे कदम को रखता
पीठ दुनी को दे के हक राह पे आएं रहनी.....

4 पहचान कर धनी की सेवा में मग्न हैं
अपने पिया को रिझाऊं एक ही लग्न है
चरण धनी के रख रख के दिल में बसाएं, रहनी.....

5 पिया के लिए तड़पते होठों पे ताले
विरह की आग जलते आह ना निकाले
इंतहा दर्द में छिप कर अश्क वे बहाएं, रहनी.....

6 ऊपर की रहनी छोड़ असल रहनी आई
इश्क में गर्क सदा वो देते ना दिखाई
प्रीतम में रहते मोमिन सदा ही समाए --- 3